Cosmos Multidisciplinary Research E-Journal
Online Available at www.cmrj.in
Recognized International Peer Reviewed Journal
Impact Factor 4.94
ISSN No. 2456-1665

विश्व व्यापार संगठन और भारत

डॉ. अर्चना बी. जैन
अर्थशास्त्र विभाग प्रमुख
न.मा.द.महाविद्यालय, गोंदिया

प्रस्तावना :–

दुसरे विश्व महायुद्ध के बाद बहुत से राष्ट्रों ने मिलकर अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का प्रसार करने के लिए प्रयास शुरू किए। इसका परिणाम यह हुआ कि १९४७ में २३ देशों ने प्रशुल्क एवं व्यापर संबंधी सामान्य समझौते पर (GATT) हस्ताक्षर किये भारत GATT का संस्थापक सदस्य रहा है। १९९४ तक अन्य देश भी इस संगठन में शामिल हुए जिनकी संख्या ११८ तक पहुॅच गई। अप्रैल १९९४ को एक सामान्य समझोते पर हस्ताक्षर होने से विश्व व्यापार संगठन की स्थापना के लिए मार्ग प्रशस्त हो गया। इस समझौते पर GATT के सदस्य देशों ने हस्ताक्षर किए और १ जनवरी १९९५ को विश्व व्यापार संगठन (WTO) की स्थापना हो गई। इस समय WTO के १५३ देश सदस्य है। GATT कोई संस्था नही थी अपितु मात्र एक वैधानिक व्यवस्था थी परंतु WTO एक अन्तराष्ट्रीय संस्था है और इसका मुख्य कार्य यह निश्चित करना है कि वस्तुओं का अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार सेवाओं का अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार, विदेशी निवेश, बौद्धिक संपदा अधिकार इत्यादि निश्चित नियमों के आधार पर निर्धारित हो।

आज भारत में वैश्वीकरण को लेकर यह विचारणीय बहस है कि भारत जैसे विकासशील देशों के लिए इसकी प्रासंगिकता और उपयोगिकता है। वैश्वीकरण के लाभों व नुकसानों को लेकर जो बहस चल रही है वह भारत तक सीमित नहीं है। बल्कि समूचे विश्व में इस पर बहस चल रही है। जहाँ कई लोग इसके बिल्कुल विरोधी है, वहाँ कई इसका पुरजोर समर्थन भी करते है। लेकिन तथ्य यह है इसके समर्थक और विरोधी दोनों ही सही नही है। WTO का देश के व्यापार पर कुछ अनुकुल प्रभाव हुए है तो कुछ प्रतिकुल प्रभाव देखने को मिले है। सर्वप्रथम हम WTO के उद्देश्य का अध्ययन करना होगा।

विश्व व्यापार संगठन के उद्देश्य :–

१) सदस्य देशों को अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में कठिनाई न हो तथा व्यापार सहजता व सुगमता से हो सके ऐसे स्वतंत्र व्यापार (मुक्त) का प्रारंभ करना।
२) अन्य अंतर्राष्ट्रीय प्रतिनिधी संस्था में समन्वय बनाना।
३) अंतर्राष्ट्रीय व्यापार की विभेद पद्धती को समाप्त करना।
४) विविध देशो के बीच भेदभाव पूर्ण नीति समाप्त करना।
५) सदस्य देशों के व्यापार संबंधी आपसी विवाद को हल करना।
६) विकासशील देशों की आर्थिक आवश्यकता ध्यान में रखकर विश्व व्यापार में उचित स्थान देना।
७) सभी सदस्य देशों की व्यक्तिगत आय बढ़ाना और रोजगार बढ़ाने का प्रयास करना।
८) देश में उपलब्ध साधन सामुग्री का उचित उपयोग करना।
९) देश के लोगों का जीवन स्तर में वृद्धि करना।

१०) विकासशील देश के आर्थिक विकास में सहायता करना तथा राष्ट्रीय आय में वृद्धि करना।

११) देशो में स्थायी विकास का प्रयास करना।

१२) वस्तु व सेवा के उत्पादन और व्यापार में वृद्धि करना।

१३) पर्यावरण संरक्षण को ध्यान में रखकर निरंतर विकास की संकल्पना स्वीकारना।

१४) अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर व्यापार संबंधित विवाद हल करने के लिए उचित समिती का गठन करना।

१५) अधिक उदरीकरण की नीति अपनाना।

वैश्वीकरण का अर्थ है देश की अर्थव्यवस्था को विश्व की अर्थव्यवस्था के साथ ''एकीकृत'' करना। जिसमें भारतीय अर्थव्यवस्था को निवेश के लिए खोलना, व्यापार पर से नियंत्रण को हटाना तथा मुक्त व्यापार की ओर अग्रसर होना है। बहुराष्ट्रीय निगमों को देश में आने की व निवेश करने की सुविधा प्रदान करना तथा भारतीय कंपनीयों को विदेशी कंपनीयो के साथ सहयोग करने की अनुमति प्रदान करना। भारत को वैश्वीकरण की प्रक्रिया को सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पहलू है। जैसा कि अन्य किसी भी वैश्विक आर्थिक परिवर्तन के साथ है जैसे कि १८ वी सदी की औद्योगिक क्रान्ति इससे कुछ देशों को लाभ हुआ तो कुछ को हानि। वैश्वीकरण के मामले में भी यही बात है। लेकिन एक बड़ी भिन्नता अवश्य है कि पुराने दिनों की तुलना में अब हमारी नियति वैश्वीकरण के अवसरों और इसको चुनौतियों पर दृष्टिपात करने से पूर्व यहाँ यह जानना प्रासंगिक होगा कि हम वैश्वीकरण के संदर्भ में कहाँ खड़े है। वैश्वीकरण का सर्वाधिक सामान्य माप यह है कि किसी देश की विदेशी व्यापार में कितनी सहभागिता है। विश्व व्यापार में भारत का हिस्सा ०.७ प्रतिशत है जो कि सिंगापूर से भी बहुत कम है।

दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि किसी देश की अर्थव्यवस्था के वैश्वीकरण के लिए कितना अच्छा या बुरा है। वैश्वीकरण को विचारधारा के स्तर पर मुक्त बाजारों के प्रभुत्व के रूप में देखा जा सकता है। जो विश्व की अर्थव्यवस्थाओं को निकट लाते है और जो समूचे विश्व में उत्पाद बाजारो और वित्तीय बाजारों को अधिक एकीकृत करते है। परंतु भारत सबसे कम वैश्वीकृत देशों में आता है।

आज किसी देश के विकास हेतु पूंजी की उपलब्धता और साधनों की उत्पादकता का महत्व घटा नही है। किन्तु पूंजी की वैश्विक गतीशिलता में नाटकीय परिवर्तन आ जाने के कारण अब पूॅजी के स्त्रोत व उपयोग के महत्वपूर्ण निर्धारक के रूप में राष्ट्रीय सीमाओं का महत्व नहीं रह गया है। मुक्त बाजार को विशेष महत्व दिया गया है। ताकि देशों के बीच अंतर को कम किया जा सकें तथा नये बाजार उपलब्ध होने में मदत मिल सके। मुख्य व्यापार के साथ साथ सेवा क्रांति का भी उदय हुआ है। परंपरागत अर्थव्यवस्था में उत्पाद के निर्माण पर तथा कृषि पदार्थे के उत्पादन पर ध्यान दिया जाता था। लेकिन अब अधिकांश अर्थव्यवस्थाओं में सेवा क्षेत्र आय और रोजगार के प्रमुख स्त्रोत बन गये है। वस्तुओं और सेवाओं के बीच की दीवार भी समाप्त हो रही है। कई औद्योगिक उत्पाद सिर्फ निर्मित नहीं किये जाने बल्कि उनके लिये शोध किया जाता है। उनकी डिझाईन, विपणन, विज्ञापन, विवरण आदि का काम किया जाता है।

भारत की दृष्टि से वैश्वीकरण विकास के अवसर प्रदान करती है। ज्ञान पर आधारित सेवाओं का तेजी से विस्तार हो रहा है। ज्ञान पर आधारित सेवाओं जैसे पेशेवर व तकनीकी सेवाओं का बहुत तेजी से विस्तार हो रहा है। भारत में प्रौधोगिकीय व शैक्षणिक संस्थाओं का विकसित ढांचा मौजूद है और श्रम लागते नीची है, इसलिए भारत इन सेवाओं की आपूर्ति करके भारी लाभ कमा सकता है। इसके साथ ही यहॉ इस बात को मानना चाहिए कि हाल के

वर्षो में वैश्विक उत्पादो, सेवाओं व वित्तीय बाजारों के बढ़ते एकीकरण से भारत सहित समूचे विश्व के सामने राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के प्रबंध के लिए नई चुनौतियाँ भी प्रस्तुत हुई है। पुराने दिनों के बजाए अब स्वीकार्य अन्तर्राष्ट्रीय मापदण्डों, पारदर्शिता एवं वित्तीय जवाबदेही के अनुरूप स्वयं की धीमी गति से बदलने पर, राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं को इसकी भारी किंमत चुकानी पड सकती है। हमें आज के बदलते वैश्विक परिदृश्य के प्रति सावधानरहना है। दूरी की मृत्यु, सेवा क्रान्ति और पूंजी की गतिशिलता में सब वैश्वीकरण को दर्शात है और भारत के लिए अभूतपूर्व अवसर प्रस्तुत करते है।

विश्व व्यापार संगठन के कार्यो का मूल्यमापन :—

विश्व व्यापार संगठन की स्थापना के २३ वर्षो के बाद इनके कार्यो का मूल्यमापन करना आवश्यक है।

विश्व व्यापार संगठन के लाभ :— (अनुकूल मुद्दे)

इस संगठना की स्थापन मुक्त व्यापार में विविध समस्याओं के समाधान के लिए किया गया है। जिससे विश्व को अंतराष्ट्रीय आर्थिक स्थिती सुधारे में सहायता मिलेगी। WTO के लाभ विविध देशों को निम्न रूप से प्राप्त हुए है।

१) वस्तु व्यापार में उदारीकरण — विश्व व्यापार संगठना के कारण अनेक औद्योगिक व विकासशील देश अपने व्यापार को मुक्त करने की ओर कदम उठाये है। करों में कटौती होकर विश्व व्यापार का विस्तार होने में सहायता मिली है।

२) औद्योगिक उत्पादन — उद्योग प्रधान देशों ने १९९५ के बाद आयात कर में कमी हुई। विकासशील देश के विकास में आयात औद्योगिक उत्पादन में महत्वपूर्ण योगदान है। ऐस उत्पादन पर कर करने का कार्य संगठन करता है।

३) WTO का सदस्य बनने के बाद भारत सरकार ने ६७ प्रतिशत शुल्क लाईनों पर अधिकतम सीमा की घोषणा की जबकि उरूग्वे दौर से पहले कवल ६ प्रतिशत शुल्क लाईनों पर अधिकतम सीमा की व्यवस्था थी।

४) बौध्दिक संपदा अधिकारों में पेटेंट व कॉपीराईट संरक्षण की व्यवस्था है। इस संदर्भ २००५ में भारत ने पेटेंट, औद्योगिक डिझाइन, ट्रेडमार्क, औद्योगिक चिन्हें व कॉपीराईट को अपना लिया गया।

५) सेवाओं व व्यापार संबंधीसामान्य समझौते के अर्थात भारत सरकार ने ३३ गतिविधियों के संबंध में अपनी वचन बद्धता प्रकट की।

६) विश्व व्यापार संगठन करार में मूल्यपतन और औद्योगिक आर्थिक सहायता इनके संबंध में अंतराष्ट्रीय नियम स्पष्ट व कठोर है।

७) विकासशील देशों पर उदारीकरण का काफी लाभ हुआ है। विश्व व्यापार संगठन के कारण उद्योग प्रधान देशों का व्यापार बढ़ा है। सूती वस्त्र का निर्यात विकासशील देशों से अन्य देशों में ८० प्रतिशत तक बढ़ा है।

८) WTO के कारण विकासशील देशों को उत्पादन में वृद्धि व क्षेत्रिय निर्यात के अवसर बढ़े है। कृषि उत्पादन विभाग व कपड़ा उद्योग को काफी लाभ हुआ है।

विश्व व्यापार संगठन और भारतीय अर्थव्यवस्था के विभिन्न पहलुओं पर प्रभाव :

भारत विश्व व्यापार संगठन का संस्थापक सदस्य होने के नाते इस संगठन के निर्णयों का पालन करता है। WTO का भारतीय अर्थव्यवस्था पर जो प्रभाव हुआ उसका अध्ययन करना आवश्यक है।

भारतीय उद्योग पर प्रभाव :— WTO भारत पर इस बात पर दबाव डालता रहा है कि वह आयात शुल्कों को कम करे, उपभोग वस्तु करे आयात पर लगी पाबंदीयों को हटाऐ। भारत ने कोटा, आयात एवं निर्यात लाइसेंसों के रूप में २७०० कृषि वस्तुओं टैक्सटाईल एवं औद्योगीक उत्पादों पर मात्रात्मक प्रतिबंध लगा रखे थे उसे २००३ तक हटा दिये गये। इससे भारतीय बाजार में विदेशी उपभोग वस्तुओं की बाढ आ गयी है और परिणामत: भारतीय उद्योग को भारी नुकसान हुआ है।

२) प्रतियोगीता का सामना :— वैश्वीकरण के कारण भारतीय उद्योग को घरेलू और अन्तर्राष्ट्रीय दोनो ही प्रकार की प्रतियोगिताओं का मुकाबला करना होगा। भारतीय उद्योग सक्षम विपणम व्यवस्था का विकास नही कर पाया है। अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता के सम्मुख भारतीय उद्योग की स्थिति अभी तक सराहनीय नही है।

३) अन्तर्राष्ट्रीय गुणवत्ता की प्राप्ति — अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता में बने रहने के लिए एक महत्वपूर्ण बात उत्पाद की गुणवत्ता को बनाये रखना है। भारतीय उद्योग द्वारा निर्मित वस्तु अन्तर्राष्ट्रीय मानक पर खरे नही उतरे है। इसके लिए नवे अविष्कार या नव—प्रवर्तकों के लिए शोध व विकास पर विशेष ध्यानकेन्द्रित करना होगा।

४) चीनी वस्तुओं का आयात :— WTO के कारण बाजार में चीनी वस्तुओं की बाढ़ सी आ गयी है। चीनी — डम्पिंग के विरूद्ध कार्यवाही विश्व व्यापार संगठन के प्रावधानों के तहत ही की जा सकती है। चीनी वस्तुऐ न केवल व्यापार को सामान्य मार्गो से आ रहीहै बल्कि इनका आयात नेपाल से शून्य शुल्क तथा गैर—कानूनी ढंग से किया जाता है। डम्पिंग विरोधी मामला तैयार भी बहुत कठिन है।

५) कुशलता बढ़ाना — भारतीय अर्थव्यवस्था के बारे में प्राय: यह कहा जाता है कि इसकी लागत अधिक और कुशलता निम्न है। यह बात भारतीय फर्मो के उपर भी लागू होती है। निम्न कुशलता के पीछे यह भी एक प्रमुख तथ्य है। कई औद्योगिक इकाईया तो रूग्णावस्था में भी है। लेकिन उनका वैश्वीकरण के दौर में वैश्विक चुनौतियों का सामना करने हेतु यह आवश्यक है कि खुले द्वार की नीति को आगे बढ़ाने के अवसर के रूप में देखा जाये और अपनी कुशलता को बढ़ाने हेतु गंभीर प्रयास किय जाये।

६) ब्रान्ड छबि बनाना — भारतीय उद्योग के सम्मुख वास्तविक चुनौती अब अपनेलिए प्रथम रूप से ब्रान्ड छबि को निर्मित करना है। भारत में निर्मित ब्रान्ड को प्रतिष्ठित बनाना।

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि भारतीय उद्योग के सम्मुख विभिन्न प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पडेगा। प्रत्येक चुनौती कुछ अवसरों और कुछ आशंकाओ को प्रस्तुत करती है। यह भारतीय उद्योग की परीक्षा की घड़ी है कि वह कैसे इस चुनौतियों को अवसरों में बदल पाता है और इनसे लाभ उठा पाता है। आधुनिक अन्य प्रौद्योगिकी को काम में लेना होगा और इन सबसे उपर उच्च व्यावसायिक नीतिशास्त्रीय आचरण को अपनाना होगा तभी यह कहा जा सकेगा कि देश के आर्थिक विकास में भारतीय उद्योग की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। WTO अब अपने अस्तित्व के २३ वर्ष पूर्ण कर चुका है। इन २३ वर्षो के अनुभव से पता लगता है कि सभी देशों को समान अधिकार प्राप्त है। फिर भी विकसीत देशों का बोलबाला है। वस्तुत: समानता की बात ढकोसला है। सभी विवादों का निदान मुक्त व्यापर के किन्ही आदर्श सिध्दातों के आधार पर नही होता अपितु इस बात से होता है कि ताकतवर कौन

है तथा किसकी सौदाशक्ति सबसे ज्यादा है। स्पष्ट है कि विवादों में अंतिम जीत विकसित देशों की ही होती है। सार मूल समझौते और सभी संशोधन विकसित देशों के पक्ष में किए गए है। स्पष्ट है कि अधिकतर विकासशील देश विकसित देशों के खिलाफ बदले की कार्यवाही नहीं कर पाएंगे और चुप रहेने में ही भलाई समझेंगे। यही कारण है कि WTO के पिछले २३ वर्षो के इतिहास में विकसित देश विकासशील देशों पर पूरी तरह हावी रहे है।

सारांश :—

विश्व व्यापार संगठन एक प्रहरी की भांति काम कर रहा है। जिससे व्यापार विवादों के निपटान के समय में भी कमी आती है। भारत के सेवा निर्यात क्षेत्रों में काफी उछाल आया है। भारत को औद्योगिक रूप से विकसित देश द्वारा प्रशुल्क घटाये जाने से भारत को लाभ हुआ है क्योंकि कुछ देश भारत की वस्तुओं पर प्रशुल्क घटाने एवं इसे संगत बनाने में सहमत हो गये है।

कृषि में विश्व व्यापार संगठन के उदारीकरण ने विकास के नये द्वार खोल दिये है। जब हम अभाव की अर्थव्यवस्था से बहुलता की अर्थव्यवस्था की ओर प्रगति करत है तो हमारे लिए निर्यात बाजार में उपलब्ध विपुल अवसरों का लाभ उठाना संभव तथा आवश्यक दोनों ही है। लेकिनसाथ में हमारा देश व विश्व बाजारों में हो रहे किंमत उच्च वचनों का भी सामना कर रहा है। वैश्वीकरण की प्रक्रिया को हम भारतीय कृषि को इस प्रक्रिया के माध्यम से किसानों को उच्च निर्यात तथा उच्च आय के रूप में प्रदत्त संभावी अवसरों के लाभो को बढ़ाने के लिए सक्षम बनाना होगा। उत्पादन के क्षेत्र में जहाँ हमें तुलनात्मक लाभ है, अधिक विनियोग प्रोत्साहित करने हेतु व्यापार नीतियों को कृषि नीति के अनुसार ढालना होगा। हमें लोगों के परम्परागत ज्ञान के विशाल स्त्रोत को इकठ्ठा करना चाहिए ठीक उसी तरह से जिस तरह तकनीक में नवीनतम आविष्कारों को एकत्रित करते है। हम सबको २१ वी शताब्दी में भारत को विश्व में अग्रन्य विदेशी व्यापारे को बनानेका संकल्प लेना होगा।

संदर्भ ग्रंथ :—

१) यादव सुबहसिंह (२००७) — विश्व व्यापार संगठन व कृषि अर्थव्यवस्था सबलाईन पब्लिकेशन, जयपूर.
२) दवे रमन कुमार (२००५) — वैश्वीकरण व भारतीय अर्थव्यवस्था — आर. बी. एस. ए. पब्लिशर्स, जयपूर.
३) दत्त रूद्र एवं सुंदरम (२०१०) — भारतीय अर्थव्यवस्था एस. चन्द एण्ड कंपनीलि. नई दिल्ली.
४) मिश्र, पुरी (२०१५) — भारतीय अर्थव्यवस्था — हिमालया पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली.
५) गुप्ता के. पी. (२००५) — कृषि अर्थशास्त्र — हिमालया पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली.
६) खंडेला मानचन्द्र (२००८) — भारतीय अर्थव्यवस्था की चुनौतियाँ, अरिहन्त पब्लिशिंग हाऊस, जयपुर.
७) झामरे ग. ना. (२०१०) — भारतीय अर्थव्यवस्था व पर्यावरणात्मक विकास, विश्व पब्लिशिंग हाऊसए नागपूर.
८) www.google.com
९) लोकराज्य, अर्थ विश्व
१०) लोकसत्ता नवभारत